

Capacity Building Programme (CBP)

On Promotion of Sikki Art & Design

Theme:

**Ecofriendly Livelihoods/ Micro Entrepreneurship:
“Eco-friendly value-added products from Sikki Grass”**

Batch 1:

08 October 2025 - 17 October 2025



SUMMARY REPORT

Organized by:

Environmental Information, Awareness, Capacity Building and Livelihood Program (EIACP)

Centre for Studies on Environment and Climate

Asian Development Research Institute, Patna

*(An EIACP RP on Water Management and Climate Change under the aegis of the Ministry of Environment
Forest and Climate Change, Govt. of India)*

SUMMARY REPORT

Capacity Building Programme

Ecofriendly Livelihoods/ Micro Entrepreneurship:
“Eco-friendly value-added products from Sikki Grass”

Batch 1:

08 October 2025 - 17 October 2025

Environmental Information, Awareness, Capacity Building and Livelihood Program (EIACP)

Centre for Studies on Environment and Climate

Asian Development Research Institute, Patna

© Copyright

Environmental Information Awareness, Capacity Building and Livelihood Programme (EIACP)
Centre for Studies on Environment and Climate, Asian Development Research Institute, Patna

CSEC-ADRI Team:

Dr. Ashmita Gupta - Member Secretary, ADRI

Dr. Mousumi Gupta - Research Lead & EIACP Coordinator, CSEC-ADRI

Dr. Sunil Kumar Gupta - Research Lead & EIACP Programme Officer, CSEC-ADRI

Ms. Pooja Kumari - Information Officer, EIACP, CSEC-ADRI

Mr. Gulshan Patel - IT Officer, EIACP, CSEC-ADRI

Mr. Sanjeev Kumar - Data Entry Operator, EIACP, CSEC-ADRI

Mr. Mausam Bahar Bharbhuiya, Data Interface Developer, ADRI

Ms. Sakshi Shubham - Intern, CSEC-ADRI

Editor Team:

Ms. Pooja Kumari

Dr. Sunil Kumar Gupta

Design & Compilation:

Ms. Pooja Kumari

Ms. Sakshi Shubham

Published by:

Environmental Information Awareness, Capacity Building and Livelihood Programme (EIACP)
Centre for Studies on Environment and Climate, Asian Development Research Institute (ADRI)
BSIDC Colony, Off Boring Patliputra Road, Patna- 800 013 (Bihar), India

REPORT

DAY 1 - October 8, 2025 – Inauguration and Orientation

The Environmental Information, Awareness, Capacity Building and Livelihood Programme (EIACP) at Centre for Studies on Environment and Climate (CSEC), Asian Development Research Institute, Patna has organized a ten-day Capacity Building Programme (CBP) on Eco-friendly Livelihoods / Micro Entrepreneurship: “Eco-friendly Value-added Products from Sikki Grass” at the ADRI premises. The training programme has been conducted under the aegis of Ministry of Environment, Forest and Climate Change (MoEFCC), Govt. of India. The programme aims to foster sustainable livelihood opportunities by promoting traditional and eco-friendly crafts such as Sikki art among local women participants.

The inaugural session commenced with a warm welcome and an introductory address by Dr. Mousumi Gupta, Coordinator, EIACP. In her opening remarks, Dr. Gupta highlighted that the objectives of the programme was to build the capacities of women artisans, encourage micro-entrepreneurial ventures, and strengthen environmentally sustainable livelihood practices. She emphasized how initiatives like this contribute not only to environmental conservation but also to economic empowerment and cultural preservation. The event was graced by Prof. Rashmi and Prof. Rajni from the National Institute of Fashion Technology (NIFT), Patna, who attended as Guests of Honor. Both professors appreciated ADRI’s efforts in reviving and sustaining traditional eco-crafts and discussed the relevance of sustainable design and fashion in contemporary times. They encouraged participants to blend traditional craftsmanship with modern design sensibilities to enhance the market appeal of their products.

Following the inaugural session, State Awardee Ms. Naazda Khatoon, a master craftswoman with over 40 years of experience in Sikki art, was introduced as the Instructor for Batch 1. Ms. Khatoon shared insights into her journey as a Sikki artist and expressed enthusiasm for training and mentoring the group of 30 women participants enrolled in this programme.

All training materials, including Sikki grass and essential crafting tools such as tekua, were provided by ADRI to ensure a hands-on learning experience. Participants were taught the basic handling of Sikki grass, introduced to foundational weaving patterns such as *Kharua Bunai*, and shown sample marketable products they would learn to weave by the end of the programme. The combination of

CAPACITY BUILDING PROGRAMME
on
Promotion of Sikki Art & Design

Sikki art, also known as the "Golden Grass" craft, is a traditional Indian handicraft from Bihar that involves weaving dried sikki grass into intricate baskets, dolls, mats, and even artistic paintings and wall hangings. Originating from the Mithlanchal region

Batch-1
Date-08 Oct. 2025-17 Oct. 2025

Batch-2
Date- 31 Oct. 2025 -09 Nov. 2025

- Students will be selected on first come first serve basis.
- Maximum numbers of students can be accommodated **30** in each batch.
- After completion of course each student will get completion certificate from **Ministry of Environment Forest and Climate Change (MoEFCC)**.
- **NO course fee required.**

Interested candidates can register themselves by scanning the QR Code

Environmental Information, Awareness, Capacity Building and Livelihood Programme Centre
Centre for Studies on Environment and Climate
Asian Development Research Institute, Patna
(under the aegis of the Ministry of Environment, Forest and Climate Change, Government of India)
J20, SBC Colony, Off Beating Polysar Road, Patna -800014, Bihar (India) | info@adri.org

theory, demonstration, and practice ensured participants gained initial proficiency and understanding of both craft techniques and their commercial applications. The participants were also provided with refreshments, snacks, and meals throughout the day, creating a comfortable and engaging environment conducive to learning. The session marked a promising beginning to the multi-day training, reflecting ADRI's continued commitment to promoting sustainable livelihoods, women empowerment, and environmental stewardship through community-based initiatives. Participants were highly engaged, displaying enthusiasm and curiosity throughout the day.





सिक्की कला के संवर्धन पर आयोजित कार्यक्रम में भाग लेती प्रतिभागी • जागरण

पर्यावरण अनुकूल सिक्की कला का करें प्रसार

जासं, पटना : सिक्की कला पर्यावरण के अनुकूल होने के साथ जीआइ टैग से पारंपरिक व दुर्लभ हस्तशिल्प कला है। सिक्की उत्पादों में टोकरी, कटोरी, संदूक से लेकर सजावटी वस्तुएं शामिल हैं। मिथिलांचल क्षेत्रों में पाई जाने वाली सिक्की घास से कलाकृतियों का निर्माण होता है। ये बातें निफ्ट पटना की प्रो. रजनी श्रीवास्तव ने आद्री की ओर से आयोजित आद्री परिसर में सिक्की कला प्रशिक्षण के दौरान कही। प्रो. रजनी ने कहा कि बिहार

मिथिलांचल क्षेत्रों में पाई जाने वाली सिक्की कला का आद्री परिसर में निफ्ट पटना की प्रो. रजनी श्रीवास्तव ने दिया प्रशिक्षण

में शान्ति के समय सिक्की से बने रंगीन डलिया परिवार में भेजते थे। सिक्की कलाकृतियों की मांग खत्म हो गई है। ऐसे में इस कला का प्रसार जरूरी है। महिला प्रतिभागियों से आग्रह करते हुए कहा कि सिक्की उत्पाद बनाते

समय अपनी कल्पना का प्रयोग करते हुए आकर्षक कलाकृति बनाएं। पर्यावरण को बचाने के लिए कला को संरक्षित होना जरूरी है। आज दुनिया में प्लास्टिक उत्पादों की मांग बढ़ी है। कलाकार नजद खानून के निर्देशन में प्रतिभागियों को प्रशिक्षण दिया जाएगा। मौके पर आद्री की समन्वयक डा. मौसमी गुप्ता, डा. सुनील कुमार गुप्ता, मौसम बहार, संजीव कुमार, गुलशन पटेल, अभिषेक प्रसाद आदि मौजूद रहे।

आद्री में लगी दुर्लभ हस्तशिल्प सिक्की कला की प्रदर्शनी

पटना (एसएनबी)। सिक्की कला एक पर्यावरण के अनुकूल और जीआई-टैग से लैस पारंपरिक और दुर्लभ हस्तशिल्प है। इसके चीजों को बनाने का कौशल सिखाने के लिए एक 10-दिवसीय क्षमता निर्माण कार्यक्रम आज एशियन डेवलपमेंट रिसर्च इंस्टीट्यूट (आद्री) में प्रारंभ हुआ। सिक्की उत्पादों में आधुनिक उपयोगी वस्तुएं जैसे टोकरी, ट्रे, कटोरे, और संदूक से लेकर देवताओं और मंदिरों की त्रि-आयामी आतियाँ जैसी सजावटी वस्तुएं शामिल हैं। कार्यक्रम की शुरुआत पटना स्थित राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान की प्रोफेसर रजनी श्रीवास्तव ने की। उन्होंने अतीत को याद करते हुए बताया कि कैसे बिहार में शान्ति के समय परिवार सिक्की से बने बड़े और रंग-

बिरंगे इस घास से बने डलिया भेजते थे। इस कला की खूबसूरती यह है कि यह एक रेखीय सामग्री (सिक्की घास) को एक अगोचर तकनीक से त्रि-आयामी कलाकृतियों में बदल देता है। उन्होंने महिला प्रशिक्षणार्थियों से आग्रह किया कि वे सिक्की उत्पाद बनाते समय अपनी कल्पना का उपयोग करें और यह भी सोचें किये उत्पाद किनके लिए बनाए जाएं। उन्होंने बताया कि दुनिया भर में इस कला की मांग है और इसे सीखने के लिए निरंतर अभ्यास आवश्यक है। जयनगर की बहु-पुरस्कार विजेता सिक्की कलाकार नजदा खानून भी उपस्थित थीं। उन्होंने कहा कि प्रशिक्षणार्थी इस कला की सुनहरी विशेषताओं को तभी समझ पाएंगे जब वे स्वयं इसे बनाने का अभ्यास शुरू करेंगे।

आज

पटना

गुरुवार, 9 अक्टूबर, 2025

आद्री ने शुरू की 10 दिवसीय सिक्की क्षमता निर्माण कार्यशाला

पटना (आसं)। सिक्की कला पर्यावरण के अनुकूल और जीआई टैग से लैस पारंपरिक और दुर्लभ हस्तशिल्प से चीजों को बनाने का कौशल सिखाने के लिए 10 दिवसीय क्षमता निर्माण कार्यक्रम एशियन डेवलपमेंट रिसर्च इंस्टीट्यूट (आद्री) में प्रारंभ की। सिक्की उत्पादों में आधुनिक उपयोगी वस्तुएं जैसे टोकरी, ट्रे, कटोरे और संदूक से लेकर देवताओं और मंदिरों की त्रिआयामी आतियाँ जैसी सजावटी वस्तुएं शामिल हैं। यह बिहार और विशेष रूप से मिथिलांचल क्षेत्र में पाई जानेवाली सुनहरी सिक्की घास से बनी जाती है।

आद्री में सिक्की की मांग लगभग समाप्त हो चुकी है। इस कला की खूबसूरती

सिक्की उत्पाद बनाते समय अपनी कल्पना का उपयोग करें और यह भी

व्यापक उपयोग हमारे पर्यावरण को बचाने में मदद कर सकता है, जो

इस अवसर पर जयनगर की बहु-पुरस्कार विजेता सिक्की कलाकार नजदा खानून भी उपस्थित थीं। उन्होंने कहा कि प्रशिक्षणार्थी इस कला की सुनहरी विशेषताओं को तभी समझ पाएंगे जब वे स्वयं इसे बनाने का अभ्यास शुरू करेंगे।



यह है कि यह एक रेखीय सामग्री (सिक्की घास) को एक अगोचर तकनीक से त्रिआयामी कलाकृतियों में बदल देता है। उन्होंने महिला प्रशिक्षणार्थियों से आग्रह किया कि वे

सोचें कि ये उत्पाद किनके लिये बनाए जाएं। क्या यह कॉलेज छात्रों के लिए बनाएं या फिर बच्चों या ब्यवस्कों के लिए? निफ्ट पटना की डी प्रोफेसर रजनी रंजन ने कहा कि सिक्की का

प्लास्टिक के अत्यधिक उपयोग के कारण खतर में है। उन्होंने बताया कि दुनिया भर में इस कला की मांग है और इसे सीखने के लिए निरंतर अभ्यास आवश्यक है।

उन्होंने यह भी बताया कि अतीत में यदि सिक्की उत्पाद शादी के तोहफों में शामिल नहीं रहते थे, तो लोग इसे अपराध मानते थे। महिलाओं को सुरक्षित आजीविका प्रदान करने के उद्देश्य से शुरू किए गए इस निःशुल्क सिक्की प्रशिक्षण कार्यक्रम को भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय का समर्थन प्राप्त है। आद्री की समन्वयक डा. मौसमी गुप्ता ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम के आयोजन में डा. सुनील कुमार गुप्ता, मौसम बहार, संजीव कुमार और गुलशन पटेल के उत्साहपूर्वक सहयोग किया।



सिक्की कला : आद्री में क्षमता निर्माण कार्यक्रम हुआ शुरू

पटना। सिक्की कला को लेकर आद्री परिसर में बुधवार को दस दिवसीय क्षमता निर्माण कार्यक्रम शुरू हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत पटना स्थित राष्ट्रीय फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान (निफ्ट) की प्रो. रजनी श्रीवास्तव ने की। उन्होंने बताया कि बिहार में पहले शादियों के समय परिवार सिक्की से बने बड़े और रंग-बिरंगी डलिया भेजते थे।

कहा कि दुर्भाग्यवश आज सिक्की की मांग लगभग समाप्त हो चुकी है। इस कला की खूबसूरती यह है कि यह एक रेखीय सामग्री को अनोखी तकनीक से त्रि-आयामी कलाकृतियों में बदल देता है। उन्होंने महिला प्रशिक्षणार्थियों से आग्रह किया कि वे सिक्की उत्पाद बनाते समय अपनी कल्पना का उपयोग करें और यह भी सोचें कि ये उत्पाद किनके लिए बनाए जाएं। कार्यक्रम में आद्री की डॉ. मौसमी गुप्ता आदि थे।

सिक्की कला : महिलाओं को आजीविका के मौके देगी



पटना • आद्री की ईआईएसीपी-सीएसईसी इकाई की ओर से बुधवार को सिक्की कला पर 10 दिन का क्षमता निर्माण प्रशिक्षण शुरू हुआ। यह निःशुल्क प्रशिक्षण भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के सहयोग से हो रहा है। शुरुआत

निफ्ट की प्रो. रजनी श्रीवास्तव ने की। उन्होंने कहा कि इस प्रशिक्षण से महिलाओं का हुनर बढ़ेगा और आजीविका का रास्ता खुलेगा। पहले बिहार की शादियों में सिक्की से बनी रंग-बिरंगी डलियां तोहफे में दी जाती थीं, पर अब यह खत्म होती जा रही है।

सिक्की कला से सजावटी चीजें बनाने की ट्रेनिंग आद्री में शुरू



संवाददाता, पटना

सिक्की कला पर्यावरण के अनुकूल और जीआइ-टैग से लैस पारंपरिक और दुर्लभ हस्तशिल्प है। इस कौशल को सिखाने के लिए 10-दिवसीय क्षमता निर्माण कार्यक्रम बुधवार को आद्री में प्रारंभ किया। सिक्की उत्पादों में आधुनिक उपयोगी वस्तुएं टोकरी, ट्रे, कटोरे, और संदूक से लेकर देवताओं और मंदिरों की त्रि-आयामी आकृतियां जैसी सजावटी वस्तु बनाने की ट्रेनिंग आरंभ हुई। यह बिहार में और विशेष रूप से मिथिलांचल क्षेत्र में पायी जाने वाली सुनहरी सिक्की घास से बनायी जाती है। कार्यक्रम की शुरुआत पटना स्थित राष्ट्रीय

फैशन प्रौद्योगिकी संस्थान की प्रोफेसर रजनी श्रीवास्तव ने की। उन्होंने बताया कि इस कला की खूबसूरती यह है कि यह एक रेखीय सामग्री (सिक्की घास) को एक अनोखी तकनीक से त्रि-आयामी कलाकृतियों में बदल देता है। उन्होंने महिला प्रशिक्षणार्थियों से आग्रह किया कि वे सिक्की उत्पाद बनाते समय अपनी कल्पना का उपयोग करें और यह भी सोचें कि ये उत्पाद किनके लिए बनाये जाएं। इस अवसर पर जयनगर की बहु-पुरस्कार विजेता सिक्की कलाकार नजदा खातून ने कहा कि प्रशिक्षणार्थी इस कला की सुनहरी विशेषताओं को तभी समझ पाएंगे, जब वे स्वयं इसे बनाने का अभ्यास शुरू करेंगे।

DAY 2 - October 9, 2025

Introduction to Sikki Grass & Sustainable Crafting

The second day of the Capacity Building Programme focused on deepening participants' understanding of Sikki grass as sustainable and eco-friendly raw material. Trainers introduced the entire process of preparing Sikki- from harvesting and drying to proper storage techniques, highlighting its environmental and livelihood significance.

Experienced artisans from Bihar conducted practical demonstrations on handling Sikki grass for crafting value-added products. Participants were guided through the *Dhuthri Bunai* technique, a foundational weaving method essential for creating functional and decorative pieces.

During the hands-on session, participants crafted simple products such as *coasters and plates* to familiarize themselves with the texture, flexibility, and weaving properties of Sikki grass. The exercises helped build confidence in handling natural grasses and set the stage for more intricate product designs in the upcoming sessions.

The day concluded with an interactive discussion on the role of sustainable materials in promoting green entrepreneurship and preserving Bihar's traditional craft heritage.

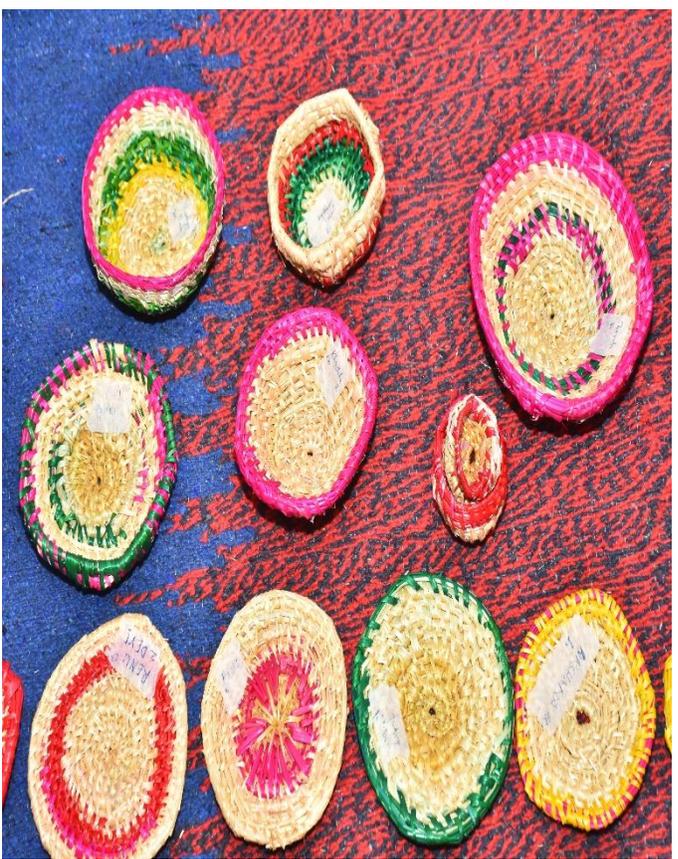




Patna, Bihar, India 
Plot No.16, Bside Colony, Adri Lane, Boring Rd, North
Sri Krishna Puri, Patna, Bihar 800013, India
Lat 25.621163° Long 85.109279°
09/10/2025 12:35 PM GMT +05:30



Patna, Bihar, India 
Plot No.16, Bside Colony, Adri Lane, Boring Rd, North
Sri Krishna Puri, Patna, Bihar 800013, India
Lat 25.621224° Long 85.109149°
09/10/2025 03:09 PM GMT +05:30



DAY 3 - October 10, 2025 -

Product Design Concepts & Creativity Workshop

The third day brought practical challenges as participants faced minor crafting injuries from the grass weaving process. Despite this, their enthusiasm remained high, thanks to the encouragement from ADRI staff who showcased finished Sikki products available in markets to keep participants motivated. Techniques like *Ek Tippa Bunai* and *Gahra Bunai* were introduced to make *tokris* and other decorative items. The day reinforced perseverance, creativity, and the importance of craftsmanship in artisan livelihoods.



DAY 4 - October 11, 2025

Advanced Craft Techniques

Participants learned the *Khakhra Bunai* technique, marking their transition into more intricate weaving. A competition was announced to encourage excellence, with prizes for the top three artisans to be awarded at the end of the programme. The atmosphere was highly motivated, with participants eager to refine their craft.



DAY 5 - October 12, 2025

Practice & Product Development

Day five was dedicated to skill reinforcement. Participants practiced consistently, creating larger products such as baskets and plates to perfect their weaving rhythm and accuracy. The training gradually shifted focus toward smaller, intricate items like earrings and rings, which required greater precision and technique.



DAY 6 - October 13, 2025

Value Addition, Innovation & Feedback Meet

The sixth day of the Capacity Building Programme focused on value addition and innovation in Sikki Art, allowing participants to apply the techniques and design concepts learned during the earlier sessions. Under the guidance of Trainer Ms. Naazda Khatoon, participants engaged in hands-on exercises to refine their craftsmanship and explore innovative product ideas. Participants worked on creating a range of value-added items such as coasters, jewelry items, hairbands, ring and utility baskets using Sikki grass. A review meeting was organized by *CSEC-ADRI EIACP* to assess progress and gather feedback. Participants expressed appreciation for the training and suggested extending the duration for deeper mastery. Registration for *Batch 2* was officially announced.



DAY 7 - October 14, 2025

Product Prototyping, Quality Enhancement and Capacity Building of Programme Functionaries, Resource Persons and Beneficiaries in Financial Literacy

On the seventh day of the Sikki Art Capacity Building Programme, a special workshop on “**Capacity Building of Programme Functionaries, Resource Persons, and Beneficiaries in Financial Literacy**” was organized to enhance participants’ understanding of essential financial concepts and entrepreneurship management. The session aimed to empower artisans and trainees with the knowledge and skills required to effectively manage income, savings, investments, and small-scale business operations. Expert from Jan Shikshan Sansthan and EIACP facilitated the workshop, covering topics such as budgeting, record keeping, banking procedures, digital payments, access to government schemes, and microcredit opportunities for women entrepreneurs. Through interactive discussions and practical examples, participants learned how to translate their craft skills into sustainable livelihood ventures. The workshop also encouraged participants to adopt a disciplined approach toward financial planning and to explore formal financial channels for expanding their micro-enterprises. The session was highly appreciated as it provided valuable insights into the financial empowerment aspect of eco-friendly entrepreneurship, complementing technical training in Sikki art.



After the session, participants were introduced to the *Dihuli Ultana Bunai* technique, used to enhance strength and aesthetic appeal. Trainers emphasised maintaining consistency, finishing quality, and eco-friendly standards across all creations. By now, all participants could independently craft complete products, including hairbands, earrings, bangles, and rings; integrating all techniques learned throughout the week. Their craft displayed growing confidence and improved craftsmanship.



DAY 8 - October 15, 2025

Certificate Distribution Ceremony

The eighth day of training marked the *Certificate Distribution Ceremony of the Capacity Building Programme on Eco-friendly Livelihoods / Micro Entrepreneurship: "Eco-friendly Value-added Products from Sikki Grass"*, organized by CSEC-ADRI EIACP at the ADRI premises, Patna. The event celebrated the dedication and creative achievements of the participants who completed the intensive hands-on training in traditional Sikki craft.

The programme began with a warm welcome address by Dr. Mousumi Gupta, Coordinator, EIACP (CSEC-ADRI), who expressed her appreciation for the enthusiasm and commitment shown by the participants throughout the training. She reiterated ADRI EIACP vision of promoting eco-friendly livelihoods, preserving Bihar's rich cultural heritage, and fostering micro-entrepreneurial development among women through such skill-based initiatives.

The event was honoured by the presence of *Shri Anjani Kumar Singh, Director General of Bihar Museum*, as the Chief Guest. In his inspiring address, Shri Singh congratulated the participants for their dedication and creativity and appreciate ADRI-EIACP initiative for revitalizing Bihar's traditional craft forms in a sustainable framework. He highlighted the importance of design innovation, precision in finishing, and understanding market trends as key factors that determine the commercial success of handicraft products. He urged the artisans to maintain high standards of quality while also incorporating contemporary design ideas to attract wider audiences. Shri Singh also emphasized the potential of linking traditional crafts with tourism and museum initiatives to expand their market reach.

A representative from Adhyan Bridge, a reputed research and advocacy platform, also participated in the ceremony and engaged in an insightful discussion with the trainees. The interaction focused on exploring future livelihood partnerships, digital promotion of handicrafts, and connecting rural artisans to larger market ecosystems through policy advocacy and institutional collaboration. This session encouraged participants to think beyond craft production towards entrepreneurship, collective marketing, and brand-building of eco-friendly products.

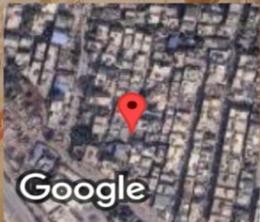
During the felicitation, all 30 participants of the first batch were presented with Certificates of Participation, acknowledging their successful completion of the training. Each participant received appreciation for their creativity, teamwork, and commitment to learning traditional Sikki craft techniques. The atmosphere was filled with a sense of accomplishment and pride as participants shared their experiences, challenges, and future aspirations to pursue Sikki craft as a source of livelihood and self-reliance.

The ceremony also featured an exhibition-cum-display of the handcrafted products developed during the training, including coasters, jewelry boxes, baskets, wall hangings, and decorative items made from Sikki grass. The intricate designs and fine craftsmanship received words of praise from the guests and attendees. Such displays not only showcased the artistic potential of the trainees but also demonstrated how traditional crafts can be transformed into value-added, marketable eco-products.

In her concluding remarks, Dr. Mousumi Gupta extended heartfelt gratitude to all dignitaries, collaborators, and participants. She honoured the efforts of Ms. Naazda Khatoon for her expert mentoring, and the ADRI team for their continuous support in organizing the training. The event concluded with a vote of thanks and a group photograph, symbolizing the unity and empowerment achieved through collective learning.

The felicitation ceremony served as a fitting finale to a meaningful journey of skill development, cultural preservation, and women’s empowerment. It reaffirmed ADRI’s ongoing commitment to strengthening traditional livelihoods and promoting sustainable, environment-friendly entrepreneurship in Bihar and beyond.





Patna, Bihar, India 

Plot No.16, Bsidc Colony, Adri Lane, Boring Rd,
North Sri Krishna Puri, Patna, Bihar 800013, India
Lat 25.621227° Long 85.109145°
Wednesday, 15/10/2025 12:05 PM GMT +05:30

युवा अपनी कल्पनाशक्ति का उपयोग कर उपयोगी सिक्की उत्पाद तैयार करें : अंजनी

पटना (आससे)। बिहार संग्रहालय के निदेशक, अंजनी कुमार

वर्गीकृत

नाम परिवर्तन

में इन्द्रकान्त मिश्रा पुत्र उमेश मिश्रा, निवास-पाली उतरवारी टोला, पाली, जिला-मधुबनी-847102, बिहार शपथ पत्र सं.-918, त्त. 15.10.2025 द्वारा यह घोषणा करता हूँ कि मेरे पोएनबी मेट लाइट इन्वर्स पॉलिमी सं. 22247370 में मेरे पिताजी का नाम राम बालक मिश्रा, पॉलिमी सं.-21963780 एवं 21960213 में मेरे पिताजी का नाम कमल कान्त झा

सिंह ने कहा कि सिक्की कला उत्पादों के लिए विपणन आउटलेट्स का विकास नागरिकों में पर्यावरणीय चेतना के बढ़ने से सीधे तौर पर जुड़ा हुआ है। उन्होंने होटलों में पर्यावरण के अनुकूल डस्टबिन के उपयोग को इसका प्रमाण बताते हुए युवा प्रशिक्षुओं से आग्रह किया कि वे अपनी कल्पनाशक्ति का उपयोग करके उपयोगी सिक्की उत्पाद तैयार करें। उन्होंने प्रसन्नता जतायी कि राज्य में सिक्की शिल्प के लिए बाजार विकसित हो रहा है। बिहार का माहौल

अब इन गतिविधियों के लिए अनुकूल हो गया है और इसका लाभ उठाना

संवर्धन कार्यक्रम के प्रतिभाशाली छात्रों को प्रमाण पत्र बांटते वक्त ये बातें बोल



चाहिए। उन्होंने बताया कि बिहार में पेपर मैश, सुजनी आदि जैसी लोक कलाओं में १५ पद्मश्री पुरस्कृत कलाकार रहते हैं। श्री सिंह सिक्की आर्ट डिजाइन के संवर्द्धन हेतु आयोजित १०-दिवसीय क्षमता

रहे थे। इस पहल का आयोजन एशियन डेवलपमेंट रिसर्च इंस्टीट्यूट (आद्री) द्वारा किया गया था तथा भारत सरकार के पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा समर्थित था। अद्यतन की आस्था अनुपम ने

नवप्रशिक्षित सिक्की कलाकारों से वादा किया कि उनकी संस्था आद्री के साथ मिलकर उनके सिक्की उत्पादों को बाजार में उचित मूल्य दिलाने और विपणन सहायता करेगी। प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेनेवाले कुछ प्रतिभागियों ने कहा कि सिक्की को प्रोत्साहन देने की आवश्यकता है बहुपुरस्कृत सिक्की कलाकार नज्दा खातून भी सभा में उपस्थित थीं। उन्होंने सुझाव दिया कि छोटे आकार के सिक्की उत्पादों के विपणन को प्राथमिकता दी जाती चाहिए। आद्री की समन्वयक डॉ. मौसुमी गुप्ता ने संचालन किया। आद्री के डॉ. सुनील कुमार गुप्ता, पूजा कुमारी मौसम बहार और संजीव कुमार ने भी कार्यक्रम को सफल बनाने में सहयोग किया।

शपथ पत्र

में सुसिलता देवी, पति राम नरेश सिंह, ग्राम कुसरे, पो.-नरगा थाना-करफी, जिला-अरवल बिहार शपथ पत्र के माध्यम से घोषणा करती हूँ। यह कि मैं उपरोक्त पते की स्थाई निवासी हूँ। यह कि मेरा आधार कार्ड

सिक्की शिल्प के लिए विकसित हो रहा बाजार

आद्री

लाइफ रिपोर्टर @पटना

बिहार संग्रहालय के निदेशक अंजनी कुमार सिंह ने बुधवार को एशियन डेवलपमेंट रिसर्च इंस्टीट्यूट (आद्री) की इआइएसीपी, सीएसइसी इकाई एवं पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा समर्थित सिक्की आर्ट डिजाइन के संवर्द्धन के लिये आयोजित 10 दिवसीय क्षमता संवर्धन कार्यक्रम में छात्रों को प्रमाण पत्र बांटा।

उन्होंने कहा कि सिक्की कला उत्पादों के लिए विपणन आउटलेट्स का विकास नागरिकों में पर्यावरणीय चेतना के बढ़ने से सीधे तौर पर जुड़ा



सिक्की कलाकारों को मिला प्रशिक्षण व प्रोत्साहन

अंजनी कुमार सिंह ने कहा कि बिहार में सिक्की शिल्प के लिए बाजार विकसित हो रहा है और राज्य का माहौल अब लोक कलाओं के संवर्द्धन के लिए अनुकूल है। बिहार में पेपर मैश, सुजनी जैसी लोक कलाओं में 15 पद्मश्री कलाकार कार्यरत हैं, जो राज्य की समृद्ध परंपरा का प्रतीक हैं। कार्यक्रम में अद्यतन संस्था की

आस्था अनुपम ने नवप्रशिक्षित सिक्की कलाकारों को आश्वासन दिया कि उनकी संस्था आद्री के सहयोग से उनके उत्पादों को बाजार में उचित मूल्य और विपणन सहायता दिलाएगी। कार्यक्रम का संचालन डॉ. मौसुमी गुप्ता ने किया, जबकि डॉ. सुनील कुमार गुप्ता, पूजा कुमारी, मौसम बहार और संजय कुमार ने सहयोग दिया।

हुआ है। युवा प्रशिक्षुओं से आग्रह किया है कि वे अपनी कल्पनाशक्ति

का उपयोग करके उपयोगी सिक्की उत्पाद तैयार करें।

DAY 9 - October 16, 2025

Final Product Display & Evaluation

The final evaluation showcased remarkable craftsmanship. Judges Ms. Nazda Khatoon and Dr. Sunil Kumar Gupta commended the participants for their precision, finishing, and creativity, especially impressive given their short training period. Certificates and cash prizes were presented by Dr. Mousumi Gupta to the winners:

1st Prize: *Guriya Kumari* – Flowerpot (Rs. 3000)

2nd Prize: *Preeti Roy* – Innovative Wall Hanging (Rs. 2500)

3rd Prize: *Manatut Devi* – Daliya (Rs. 2000)



Journalist from Economics Magazine interacted with the trainees

During the ongoing Capacity Building Programme on Sikki Grass, a senior journalist from The Economist magazine visited the ADRI premises and learned about the training initiative and the traditional craft of Sikki art. The trainer explained her about the community-based skill development programmes contribute to sustainable livelihoods, women's empowerment, and the preservation of indigenous art forms in Bihar.

The journalist interacted with the EIACP-CSEC team, including Pooja Kumari, EIACP Information Officer who briefed about the objectives and impact of the programme in promoting eco-friendly entrepreneurship. The visitors also engaged with the trainer, Ms. Naazda Khatoon, and women participants, observing live demonstrations of Sikki product-making and learning about the process from raw grass preparation to the creation of finished value-added items.



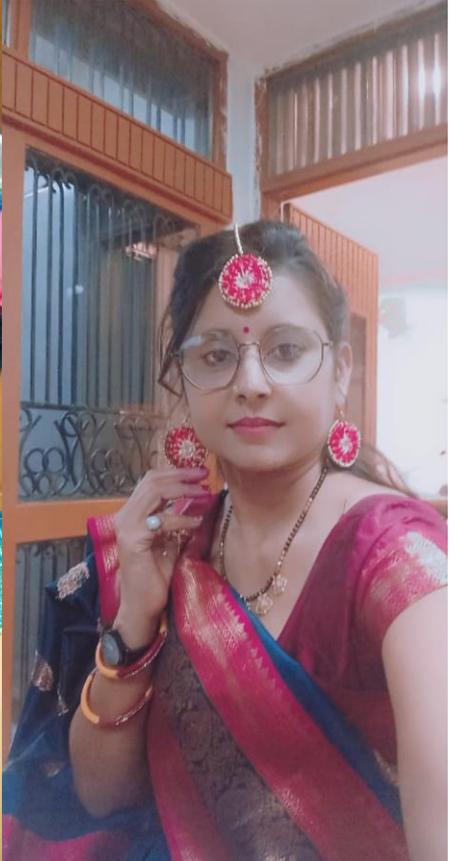
DAY 10 - October 17, 2025 - Closing Session

The final day was dedicated to continued weaving and peer-to-peer learning. Participants refined their techniques and exchanged insights, concluding the 10-day workshop with enthusiasm. Dr. Mousumi Gupta, Dr. Sunil Kumar Gupta and Ms. Pooja Kumari of CSEC-ADRI addressed the participants, motivating them to pursue micro-entrepreneurship with eco-friendly Sikki products sustainably. Dr. Asmita Gupta, Member Secretary, ADRI, expressed her heartfelt thanks to the participants, trainers, and all collaborators, acknowledging their dedication and active engagement throughout the 10-day programme. She highlighted the success of the workshop in empowering women, promoting eco-friendly livelihoods, and strengthening traditional arts, wishing all participants a bright future in their entrepreneurial pursuits.

The programme concluded on a high note of enthusiasm and optimism, with participants leaving equipped with both technical skills and entrepreneurial insights, ready to transform their Sikki creations into sustainable livelihood opportunities.









ANNEXURE I**Participant Detail of Capacity Building Programme on Sikki Art (Batch I)**

SI No.	Full Name	Father's/ Spouse Name	DOB	District	Permanent Address	Mobile Number	Aadhar Card Number	Category
1	Aarti Kumari	W/O Avinash	28/7/1992	Patna	Fair field Colony	8252285450	992060318775	OBC
2	Archana Kumari	Raju Kumar	15/03/1997	Patna	C/O: Raju Kumar, Road No.-21, Rajiv Nagar, Keshari Nagar, Patna, Bihar-800024	8252571137	484713905904	OBC
3	Beauti Singh	W/O Raju Kumar Singh	04/02/1994	Bhojpur	Narahi, Chandi, Bhojpur, Bihar 802161	9572682348	875949556807	Gen
4	Bindu Kumari	W/O Prem Shankar Ray	28/03/1992	Patna	Nageshwar Colony, Kawi Raman Path, Nageshwar Colony, Patna, Bihar 800001	8581830463	693262738921	OBC
5	Chanda Kumari	W/O Chandan Kumar Mandal	02/07/1997	Katihar	W/O: Chandan Kumar Mandal, shabda, Sabda, Katihar, Pothia, Bihar, 854114	6203175390	495962009769	OBC
6	Gita Devi	W/O Late Rahul Rai	1/1/1974	Patna	Ganga Vihar Colony	9835435399	527976416018	OBC
7	Gudiya Devi	W/O Awdhesh Kumar	1/1/1989	Patna	Fair field Colony	9204237334	371115601633	OBC
8	Gudiya Kumari	Shivsagar Shaw	40665	Patna	Village Vighrapur, Thana Jakanpur, Patna GPO	9122701989	619002397206	Gen
9	Gudiya Kumari	Rajnish Kumar	08/02/1987	Patna	West Boring Canal Road, Anand Puri, Patna, Bihar, 800001	9572133746	760351459899	Gen

10	Gudiya Rani	W/O Pramod Sah	16/11/1994	Muzaffarpur	Shakari, Post- Sonpur, Dhanaura, Muzaffarpur, Bihar 843321	8969658271	920104982148	OBC
11	Kajal kumari	W/O Ravi Kumar	10/4/2004	Patna	Fair field Colony, Digha	7520208020	230971408078	OBC
12	Kamla Devi	W/O Birju Chauhan	1/1/1979	Patna	Fair field Colony	9155843017	298599323085	Other
13	Khushbu Kumari	Krishna Sah	26/01/2005	Buxar	D/O: Krishna Sah, Jaipur, Baikunthpur, PO Itarhi, DIST: Buxar, Bihar - 802123	9631563797	269625276263	OBC
14	Khushbu Kumari	Basdev Prasad	20/10/2003	East Champaran	S/O: Basdev Prasad, Vill-tara pakar Post-mehasi, Mehsi, East Champaran, Bihar-845426	7320068883	529619089532	OBC
15	Lalti Devi	W/O Brij Nandan Mehto	25/4/1985	Patna	Fair field Colony	7061157167	984229365355	Other
16	Manatut Devi	W/O Dharnendra Mahto	01/01/1987	Sitamarhi	Ward no. 9, Karharwa, Singhbahni, Sitamarhi, Bihar 843317	9931583843	783290036913	OBC
17	Meena Devi	W/O Jamuna Ram	1/6/1975	Patna	Fair field Colony	8864058932	903099781469	SC
18	Pinki Kumari	Shiv Shankar Prasad Singh	12/12/1984	Lakhisarai	W/O Akhilesh Kumar,.Dhiradandh, Juas, Lakhisarai. Bihar-811311	6203324322	712846102600	Gen
19	Preeti Roy	Late Rahul Rai	18/12/2003	Patna	Ganga Vihar Colony	7061535477	809058466655	OBC
20	Pooja Devi	W/O Ajay Kumar	20/8/1989	Patna	Fair field Colony, Digha	9241015816	943260471737	SC
21	Rajashi Bhowmick	Tapan Kumar Bhowmick	14/02/1987	Bihar	Nehru Nagar, Patliputra	9113107700	949360112114	Gen
22	Ranjita Awasthi	Kumar Ravindra Awasthi	01/01/1983	Patna	Vidyut Board Colony Road No-1F, Near Energy Park, Rajvanshi Nagar, PO: L.B.S Nagar, DIST: Patna,800023	8544150974	560674786694	Gen

23	Renu Devi	Yadunandan Prasad	01/01/1969	Patna	Budha Colony, PO GPO Goriya Asthan, near Gandhi murti, VTC Phulwari, Patna 800001	8434083235	479040284782	Gen
24	Renu Devi	Jay Prakash	30/12/1986	Patna	Indrapuri, Road no. 11, House No. 11, Patna	9155631774	358666014224	OBC
25	Ruchi Kumari	Ann Ray	28/12/2005	Patna	West Boring Canal Road, Behind Monika Apartment, Patna, Bihar 800001	6207976093	903651723130	OBC
26	Saniya Kumari	Sanjay Pandit	15/02/2007	Patna	D/O: Sanjay Pandit, Rajapur, Mainpura, Buddha Colony, Patna, Bihar 800001	7870801265	534380640478	OBC
27	Sharda Kumari	W/O Mukesh Kumar Sinha	24/08/1997	Patna	W/O Mukesh Kumar Sinha VIILLAGE ANDHARA CHAUKI, Sarwan, PO: Goraikhari DIST: Patna Bihar-801104	8102633278	266976970907	OBC
28	Shivani Kumari	Briju Kumar Saw	28/09/2004	Patna	D/O: Briju Kumar Saw, Mainpura Kaunuana Gali, Patna G.p.o., Patna, Bihar - 800001	7856834054	988268039351	OBC
29	Shristi Gupta	Shailendra Prasad	06/08/2003	Patna	5d/16, Vivekanand Marg 5D, Opposite AN College, Boring Road, Patna, Bihar 800013	8252408624	208134741698	OBC
30	Shrutee Kumari		18/10/1997	Patna	New Patliputra Colony, Amar Vihar Apt, Flat no. 101, Patliputra Colony, Patliputra, Patna, Bihar, 800013	9739921039	517004139406	Gen

EIACP Team



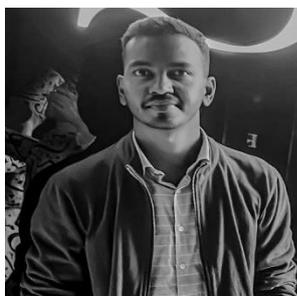
Dr. Mousumi Gupta
EIACP Coordinator



Dr. Sunil Kumar Gupta
Programme Officer



Pooja Kumari
Information Officer



Gulshan Patel
IT Officer



Sanjeev Kumar
Data Entry Operator

About the Centre

EIACP (Environmental Information Awareness Capacity Building and Livelihood Programme) has been conceptualized and is functioning now. Awareness, skilling, research and development in the green sector are some of the major prerequisites for a rational management of the environment. The programme draws its mandate from a Government of India (Allocation of Business Rules, 1961) law, wherein the objective of “Environmental Research and Development, Education, Training, Information and Awareness” has been tasked to the Ministry of Environment, Forest and Climate Change (MoEF&CC). EIACP (formerly known as ENVIS) uses a network of decentralized frameworks entrusted with the agenda of channelling country-wide efforts towards environmental conservation and management. It encompasses the best functional aspects of the erstwhile ENVIS scheme. It will serve as a one-stop platform for the dissemination of environmental information, informed policy formulation on various facets that are related to environmental health, and facilitation of alternate livelihoods using green skilling. It involves a recalibrated approach towards charting out a pathway for the MoEF&CC to establish a strong social connection, thereby enhancing impact at the ground level.

EIACP (Environmental Information Awareness Capacity Building and Livelihood Programme), Centre for Studies on Environment and Climate (CSEC), ADRI Patna





LIFE
Lifestyle for Environment



Centre for Studies on Environment and Climate Asian Development Research Institute

(An EIACP Resource Partner under the aegis of Ministry of Environment, Forest and Climate Change, GoI)



About CSEC

The Centre for Studies on Environment and Climate (CSEC) was Established in 2017 as a research wing by Lt Dr. Shaibal Gupta and Lt Dr. Prabhat P Ghosh. It is functioning under ADRI and recognized by the Ministry of Environment, Forest & Climate Change, focuses on interdisciplinary research in environmental resource management and climate change. With over two decades of experience, it has collaborated with agencies like DFID and UNICEF, MoEFCC, Various Department of Bihar Government, WISA, TERI, Shakti Foundation, BMGF, World Bank, WRI and others. The centre is working on projects related to water management, disaster risk reduction, health impacts of climate change, Pollution, E-mobility, and traditional knowledge in sustainability.

CSEC identifies niche research gaps, especially in mainstreaming climate change into governance, and emphasizes interdisciplinary approaches for effective implementation. It has conducted programme evaluation studies, including renewable energy policies, water management models, and climate change mitigation strategies. The Centre actively supports policy advocacy, having contributed to Bihar's Renewable Energy Policy and State Action Plan on Climate Change and Air Pollution, and is a trusted partner for policy inputs through surveys and field-based research. Additionally, CSEC plays a key role in information dissemination by organizing consultations and building networks among stakeholders. Its core thematic areas include environmental resource management linked to SDGs, climate change and sectoral impacts, water and sustainable management, clean and renewable energy, climate change anthropology, disaster management, and technological interventions for mitigation.

About EIACP Program Centre (PC) Resource partner (RP)

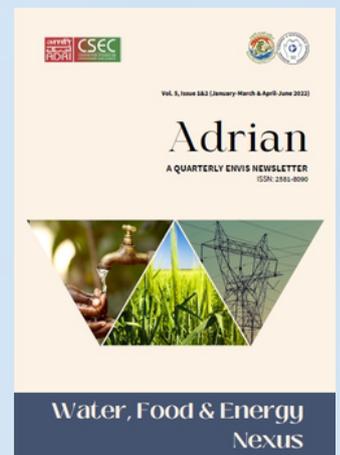
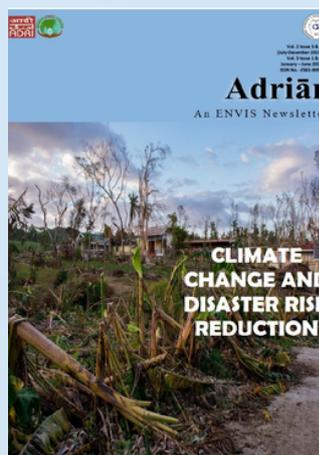
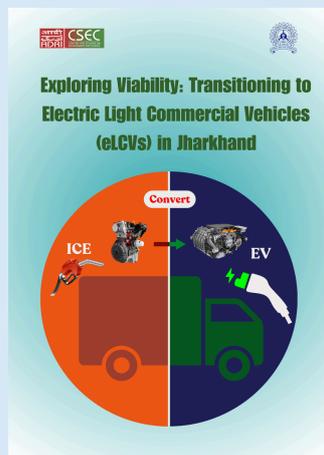
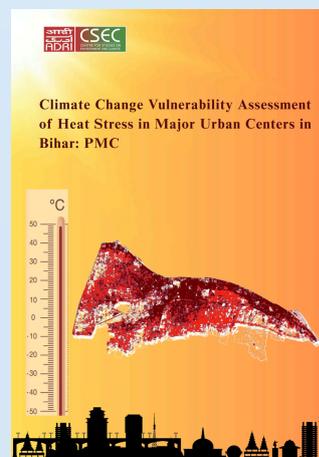
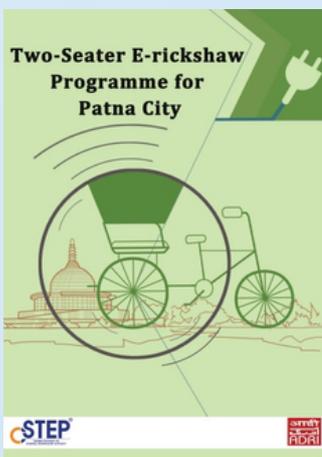
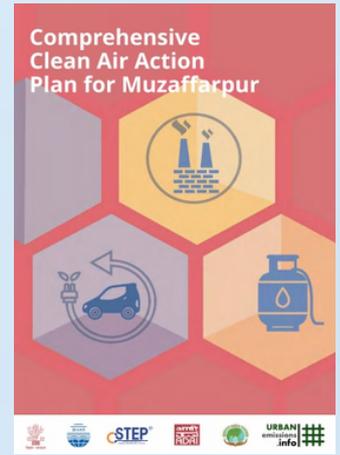
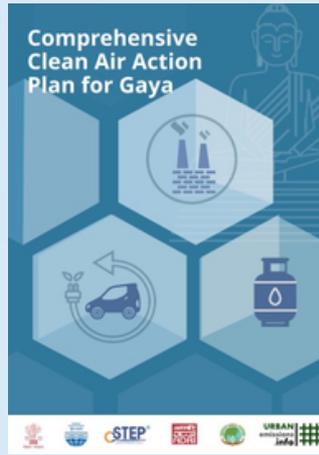
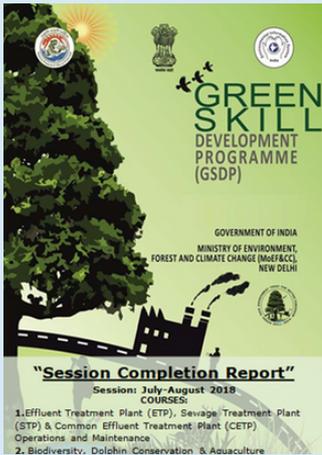


In 2018, the CSEC at Asian Development Research Institute (ADRI), Patna entered into a Memorandum of Cooperation with the MoEF&CC to establish an EIACP Programme Centre/Resource Partner on “*Climate Change and Water Management*”, at ADRI.

The Programme Centre is a repository of information, publications and other value-added products on its assigned subject area; maintaining database; conducting various events and activities across the year including mass awareness campaigns and events on Mission LiFE and SAP; conducting Green Skill Development Programme (GSDP) courses and capacity building programmes and other mandated activities as directed by Ministry of Environment, Forest and Climate Change (MoEF&CC), Govt. of India.

<https://eiacp.moef.gov.in/drc/#/eiacp/centre/41>

Major Works



Current Research

Dr. Mousumi Gupta: Lung Cancer Data Pattern Analysis, Geo-spatial Modelling, Green Development.

Dr. Sunil Kumar Gupta: Urban Air Pollution, Emission Inventory, Air Pollution & Health Modelling, E-mobility, Wetland and Climate Change.

Ms. Pooja Kumari: Climate Change, Wetland, Air Pollution, Green Hydrogen.

Mr. Gulshan Patel: Green Skill Development, Solid Waste Management, Air Pollution.

Email Id: csec@adriindia.org

Activities, Achievement & Recognition



Consultation Meeting on Cohesive Action Plan to Combat Climate Change, 2017



National Symposium on Climate Change Mainstreaming in Bihar and Release of Report on Financial Framework for State Action Plan on Climate Change(SAFFIN), 2017



Environmental debate to Commemorate Bihar Diwas, 2018



National Workshop on Air Pollution, 2018



East India Climate Change Conclave, 2018



1st Valedictory Function of Green Skill Development Programme, 2018



Valedictory Function for GSDP in River Life Management System, 2019



Launch of Patna Clean Air Action Plan (PCAAP) Report, 2019



Virtual Launch of Report-Comprehensive Clean Air Action Plan for the Cities of Gaya & Muzaffarpur, 2020



Inaugural cum Orientation function of GSDP on Pollution Monitors : Air & Water Pollution, 2020



Launch of Report on Receptor Modelling Based Source Apportionment Study of Ambient Particulate Matter in Patna City (Bihar), 2021



Signing of Memorandum of Cooperation with the Bihar State Pollution Control Board, 2021



Signing of Memorandum of Understanding with IIT Delhi, 2022



National Workshop on LiFE (Lifestyle for Environment) at Ministry of Environment, Forest and Climate Change (MoEFCC), Government of India, Indra Paryavaran Bhavan, New Delhi, 2023



Mission LiFE Exhibition at Banka, Bihar 2023



EIACP Centre ADRI Organised Mission LiFE for Wetland Campaign, Inaugurated by the Hon'ble Union Minister of State Shri Ashwini Choubey in Buxar, 2023



Mega Exhibition on Lifestyle for Environment at Ayodhya, Uttar Pradesh, 2023



Stakeholder Consultation Workshop, 2023



A Workshop on Urban Development with Emphasis on Solid Waste Management: The Case of Patna, 2024



Two-day conference on Urban Challenges: Focus on India and Patna, 2024



MoU Signing Ceremony Between Mahavir Cancer Sansthan and Research Centre and Asian Development Research Institute (ADRI), Patna, Bihar 2025



ADRI's Centre for Studies on Environment and Climate Signs MoU with Tarumitra, 2025



ADRI's Centre for Studies on Environment and Climate Signs MoU with ASTEC, Assam for Collaborative Environmental Initiatives, 2025



ADRI's Centre for Studies on Environment and Climate Signs MoU with ICAR, Patna 2025

ADRI, BSIDC Colony, Off boring Patliputra road, Patna-800013, Bihar (India)

adriindia.org

/ADRIEACP

/ADRIENVIS

/adriindia

/EIACP.ADRI

Published By,

Environmental Information, Awareness, Capacity Building, and Livelihood Programme Centre (EIACP-PC-RP),

Centre for Studies on Environment at Climate (CSEC)

Asian Development Research Institute (ADRI)

BSID Colony, Off Boring Patliputra Road, Patna 800 013

Phone: +91-612-2575649(0)

Fax: +91-612-2577102 **Web:** www.adriindia.org **Email:** csec@adriindia.org